 Lecture No-(03)

Name of the college - APSM College, Barauni, Begusarai.
L.N.M.U, Darbhanga)
Name - Dr. Bharti Kumari (AIH&C)
Lesson/plan for class - B.A (H), AIH&C, part-1, paper-1
Name of the Topic - Maurya Kalin arthik jivan

Date - 15-04-2021

मौर्यकालीन आर्थिक जीवन :- मौर्य युग में देश की विशेष आर्थिक उन्नति हुई। इसके दो मुख्य कारण थें।

(क) मौर्य सम्राटों ने देश को राजनीतिक एकता प्रदान की और दीर्घकाल तक शान्ति तथा व्यवस्था कायम रखी।

(ख) उन्होंने भारतीय राजनीतिक आदर्शों पर चलते हुए प्रजा की आर्थिक समृद्धि के लिए राज्य की ओर से विशेष प्रयत्न किये।

मौर्यों का निर्माण-विभाग सुसंगठित था, और उसके कार्य विस्तृत थें। कृषि के लिए सिंचाई का प्रबन्ध करना। शिल्प गृह बनाना तथा शिल्पियों के हितों की रक्षा करना, खाने खुदवाना, वनों एवं चारागाहों की रक्षा करना, यातायात के साधनों की देखभाल करना, पुल, बाँध इत्यादि बनवाना, बाग लगवाना, बाजार आदि खोलना आदि अनेक लोक सेवा सम्बंधी कार्य थें, जिनमें मौर्य शासक दिलचस्पी लेते थें। चाणक्य ने शासकों के इन कार्यों का विस्तार से वर्णन किया है।

(1) कृषि (2) व्यवसाय (3) व्यापार

(1) प्रवहण - समुद्र में जाने वाले व्यापारी जहाजों को प्रवहण कहा जाता था, जिसका प्रबंध पृथक अमात्य करता था।

P.T.O.

(2) संन्यात नाव :— महासागरों में व्यापार के लिए जो बड़े - बड़े जहाज काम में लाये जाते थे वे संन्यात नाव कहलाते थे जब वे किसी बंदरगाह पर पहुँचते थे तो उन्हें शुल्क देना पड़ता था।

(3) क्षुद्रका नाव → नदियों में चलने वाली छोटी - छोटी नौकाओं को "क्षुद्रका" नाव कहा जाता था।

(4) शंख मुक्ता ग्राहिणा नाव :— समुद्र से शंख, मोती आदि एकत्रित करने वाली नौकाओं को "शंख मुक्ताग्राहिणा" नाव कहा जाता था।

(5) महामानव :— नदियों में चलने वाली बड़ी - बड़ी नौकाओं को "महामानव" कहा जाता था।

(6) आप्रजा विकाधिपत्ता नौ :— ये नौकाये राजकीय सैर के लिए काम आती थी।

(7) स्वतरणानि :— स्वतरणानि लोगों की व्यक्तिगत सैर के लिए काम आती थी।

(8) हिंस्त्रिका :— यह समुद्री डाकुओं के जहाज हुआ करते थे। जल मार्ग को अनेक प्रकार के खतरे से बचाने के लिए राज्य अनेक व्यवस्थाये करता था। यदि तूफान आ जाने से जहाज में पानी भर जाता था और माल को हानि पहुँचती थी। तो उसे निकटस्थ बन्दरगाह पर पहुँचने पर शुल्क मुक्त कर दिया जाता था।

(1) कृषि :— मौर्य काल में कृषि यानि कि मौर्य काल में देश का मुख्य व्यवसाय कृषि था। इसलिए उसकी और सम्राटों ने विशेष ध्यान दिया। समस्त देश में सुसंगठित सिंचाई व्यवस्था थी। मैगास्थनीज के वृतांत से पता चलता है कि अधिकतर भूमि पर सिंचाई होती थी। और किसान वर्ष में दो - दो फसले काटते थे। कृषि के लिए अलग से कर्मचारी थे। जिनका काम था भूमि की ~~नाप~~ नाप करवाना और जलाशयों या नालियों तथा तालाबों में

P.T.O.

निरीक्षण करना

व्यवसाय :- मौर्यकाल में भारत के निवासी विभिन्न व्यवसायों तथा कला -कौशल में बहुत निपुण होते थे। इस युग का सबसे मुख्य व्यवसाय जुलाहों का था। जो रुई, रेशम, सन, ऊन आदि के विभिन्न कपड़े तैयार करते थे। सूत चार्खों पर काता जाता था। बंगाल की मलमल बहुत प्रसिद्ध थी। लोग मलमल के कामदार कपड़े पहनते थे तथा सिर पर पगड़ी धारण करते थे।

मेगास्थनीज लिखता है कि यहाँ रणनों में काम करने वाले अनेक व्यवसायी थे। चिकित्सा कार्य करने वालों को भिषक (साधारण वैद्य) जंगली विष, विष चिकित्सक गर्भ व्याधि संस्था (गर्भ की बिमारियों को ठीक करने वाले सूतिका चिकित्सक (संतान उत्पन्न करने वाले) चारों प्रकार के वैद्य होते थे। उनके व्यवसाय पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण था।

लवणाध्यक्ष के नेतृत्व में नमक का व्यवसाय का संचालन होता था इसे बनाने में समुद्र के जल का ही प्रयोग किया जाता था। शराब का व्यवसाय भी उस समय उन्नत दशा में था। राज्य में इसके लिए पृथक विभाग बना दिया गया था। जिसका अध्यक्ष सुराध्यक्ष कहलाता था। उस समय छः प्रकार की शराब होती थी ① प्रसन्न ② आसव, अरिष्ट, मैदक, मधु, व मैरेय। शराब बेचने वालों को 'शौण्डिक' कहा जाता था।

इस प्रकार मौर्य युग में उद्योग -धन्धों की विशेष उन्नति हुई। पाटलीपुत्र में तैयार माल की जाँच और बिक्री आदि के लिए विशेष समितियाँ होती थी। इसी से स्पष्ट है होता कि देश के आर्थिक जीवन में दस्तकारों का विशेष स्थान था। यूनानी लेखक ने जिक्र किया है कि- हथियार, खेती के औजार, जहाज, आदि बड़ी संख्या में बनाये जाते थे। सुन्दर वस्त्रों का खूब प्रचार था। बढ़िया सूती कपड़े के लिए भारत उस युग तक संसार के बाजारों में ख्याति पा चुका था।

P.T.O.

व्यापार :- व्यापार की भी इस युग में विशेष उन्नति हुई। लगभग समस्त भारत एक शासन-सूत्र में बंधा हुआ था। भारत तथा पश्चिमी जगत के बीच अनेक नये मार्ग खुल गये थे। व्यापार की भी इस युग में विशेष उन्नति हुई। लगभग समस्त भारत एक-शासन सूत्र में बँधा हुआ था। भारत तथा पश्चिमी जगत के बीच अनेक नये मार्ग खुल गये थे। इन चीजों ने व्यापार को अभूतपूर्व प्रोत्साहन दिया। पाटलीपुत्र के बाजारों में एशिया तथा यूरोप के विभिन्न देशों के व्यापारी की भीड़ लगी रहती थी। दक्षिण भारत चीन मेसोपोटामिया तथा एशिया माइनर की व्यापार वस्तुओं का दुकानों में जमाव रहता था। वस्तुओं के क्रय-विक्रय पर राज्य की ओर से कठोर नियंत्रण था। रेशमी वस्त्र, मलमल, छुरी, चाकू, कवच, कम्बल, हाथी दाँत की चीजें, सोना हीरे जवाहरात आदि मुख्य व्यापार वस्तुएँ थी। भारतीय व्यापारिक जहाज हिन्द-सागर में होकर टिग्रिस नदी के मुहाने तक पहुँचते थे और यहाँ के तक्षशिला में बलख एक अच्छा मार्ग था, वहाँ से भारतीय माल आक्सस नदी के द्वारा कैस्पियन तथा काला सागर होते हुए यूरोप पहुँचता। इतना उन्नत व्यापार होते हुए भी मौर्य सम्राटों ने नियमपूर्वक कोई सिक्के नहीं चलाये। यूनानी तथा फारसी सिक्के खूब चलते थे जो भारतीय सिक्के चलते भी थे, वे भद्दे ढंग के होते थे। पण मुख्य सिक्का था।

उत्तर में सिन्धु के मुहाने तक तथा दक्षिण में भरुकच्छ (भड़ोंच) तक सड़के जाती थी। इन राजमार्गों ने व्यापार को और भी अधिक प्रोत्साहन दिया।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
H.o.
15-04-2021.